शोध मंथन ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X Impact Factor 6.726 (SJIF)
Vol. X, No.IV, pp (1141-1147) Oct.- Dec. 2019

भारतीय समकालीन कला के संदर्भ में तांत्रिक अभिव्यक्ति

डॉ0 कविता सिंह

सहायक प्रोफ़ेसर (स्टेज–III),
सरदार शोभा सिंह डिपार्ट्मेन्ट ऑफ फॉइन आर्ट,
पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला।
Email: singhart6@gmail.com

सारांश

इस शोधपत्र में तांत्रिक कला जो भारत की प्राचीन कलाओं में से एक है को पूर्ण रूप से समझने तथा व्याख्यान करने का प्रयास है व इस कला में प्रचलित ज्यामितीय रूप, आकार व स्वरूपों को बारीकी से समझते हुए त्रिकोण, आयत, वर्ग, वृत्त, रेखाएँ तथा बिन्दुओं के पीछे छुपे हुए सूक्ष्म दिव्य ज्ञान को उजागर करने वाले समकालीन भारतीय चित्रकारों की कला यात्रा पर रोशनी डालने का भी कार्य किया गया है। इन महान चित्रकारों जिन में जी.आर. संतोष, बीरेन डे, के.सी.एस. पाणिकर, जे. सुल्तान अली, ज्योति भट्ट, एस.एच. रज़ा व सोहन कादरी की कला यात्रा व जीवन को भी उजाकर किया गया है तथा उन कारणों को भी जानने की गंभीर रूप से कोशिशकी कि गई है कि कैसे इन कलाकारों ने 'नव–तांत्रिक' शैली का विस्तार करते हुए भारत की प्राचीनतम कला को पूरे विश्व में मान्यता दिलवाई।

मुख्य शब्द–*तंत्र कला, अजीत मुखर्जी, चक्र, मॅदर गॉडेस, योग, बिंदु, शिव–शक्ति, ज्यामितीय आकार, पॉल सिज़ान, जी.आर. संतोष, बीरेन डे, के.सी.एस. पाणिकर, जे. सुल्तान अली, ज्योति भट्ट, एस.एच. रज़ा व सोहन कादरी।*

प्रस्तावना

भारतीय कला के पारंपरिक रूप के रंग–बिरंगे चित्रों में हम अक्सर कई प्रकार के ज्यामितीय आकार पाते हैं जैसे कि त्रिकोण, वृत, वर्ग, आयताकार, क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर रेखाएँ व उनके अन्य समीकरण स्वरूप जो रोचक होने के साथ–साथ मन लुभावने भी होते हैं। इन आकारों को हम **'तंत्र कला'** से जोड़ते हैं। यहाँ पर यह ज़रूरी हो जाता है कि हम तंत्र शब्द की मूल परिभाषा पर रौशनी डालें जोकि चिर काल से भारत के योगियों, संतों, विचारकों की अनूठी अध्यात्मिक अभिव्यक्ति है। तंत्र शब्द का शाब्दिक अर्थ संस्कृत भाषा **'तन'** से लिया गया है। जिसका अर्थ **'विस्तार'** की ओर इशारा करता है। सुप्रसिद्ध लेखक व कला इतिहासकार–**'श्री अजीत मुखर्जी'** के द्वारा लिखित पुस्तक – 'तंत्र कला–इट्स फिलासफी एण्ड फ़िज़िक्स (1967)' के अनुसार, *''तंत्र सभी व्यापक ज्ञान या ज्ञान के विस्तार को इंगित करता है। मानव अनुभव तंत्र की खोज और ऊर्जा के केन्द्रों के स्थान के कारण हैं– यह **'चक्र'**। तंत्र के अनुसार*

प्रत्येक व्यक्ति उस ऊर्जा का प्रकटीकरण है और हमारे आस–पास की वस्तुएँ उसी चेतना का परिणाम हैं जो स्वंय को विभिन्न तरीकों से प्रकट करती हैं।'' वे आगे विस्तार रूप से ब्यान करते है, *''तंत्र ने विचार और अभ्यास की एक प्रणाली विकसित की है जो हमें ब्रह्मण्ड को ऐसे दिखा सकती हैं जैसे कि वह स्वंय के भीतर है और स्वंय के रूप में यदि हम ब्रह्मण्ड के भीतर हैं। हमारी कल्पना से जो रूप बनता है वह हमारे निराकार सार को व्यक्त करता है। तंत्र जीवन का एक अनुभव और वैज्ञानिक विधि है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी अंतर्निहित आध्यात्मिक शक्ति को बाहर निकाल सकता है।''*[1] शैव, शक्त, जैन, बौद्ध या वैष्णव धर्मों ने मन और चेतना का अनंत अन्वेषणों पर अपने दर्शनकी आधारशिला रखते हुए ब्रह्मण्ड के विशाल विस्तार, इसके खगोलीय पिंड़ों और परमाणु के साथ सम्बंधित खगोलीय निष्कर्षों का अध्ययन करते हुए इसके **''लौकिक अंश''** के रूप का भी खुलासा किया है जो युगों से मानव जाति की चेतना को उज्जवलित कर रहे हैं।[2]

कुछ माप डंडों को समझते हुए कुछ हद तक तंत्र और तांत्रिक कला की उत्पत्ति के केन्द्र को हम समझने में समर्थ हैं जो सिंधु घाटी सभ्यता में प्रचलित विभिन्न प्रकार के योगिक आसनों की ओर ईशारा करते हैं। आज भी **'मॅदर गॉडेस'** की नन्ही मूर्तियों और प्रजनन पंथ की अभिव्यक्ति में इस प्रथा का प्रचलन है।[3] इस प्रकार **'लाल बिंदी और बिंदु'** आज भी पूरे भारत वर्ष में महिलाओं के माथे के बीचों बीच सजाए आकार का तात्पर्य प्रजनन शक्ति व वैवाहिक आनंद से जाना जाता है। मन और शरीर के मिलन को प्राप्त करने के लिए योग आसन और श्वास अभ्यास (प्राणायाम) का प्रयोग आज भी किया जाता है जो आंतरिक चेतना, आत्म–साक्षात्कार और ब्रह्मानंद की प्राप्ति के लिए भौतिकी और तत्वमीमांसा का प्रतिनिधित्व करता है। योग के माध्यम से से यह माना जाता है की व्यक्ति मानसिक एकाग्रता को जागृत कर सकता है और वह सब विकसित कर सकता है जो अचेतन में सुप्त है।[4]

तंत्र परिभाषित करता है कि सभी अभिव्यक्तियाँ एक मौलिक द्वैतावाद पर आधारित है– एक पुरूष सिद्धांत जिसे **'पुरूष'** या ब्रह्माण्डिय चेतना के रूप में जाना जाता है और एक महिला सिद्धांत जिसे **'प्रकृति'** या ब्रह्मण्डिय बल के रूप में जाना जाता है।[5] इसे **'शिव–शक्ति'** कहा जाता है ओर अन्य प्राच्य सभ्यताओं में **'यिन'** और **'यांग'**। इसी सोच को और गहराई से समझते हुए यह भी प्रत्यक्ष रूप से कह सकते हैं कि तांत्रिक तथा वैदिक क्रियाओं, लोकाचार और विचारधाराओं में समानता है जिनकी उत्पत्ति **'इंडो–आर्यन'** मूल से है। तंत्र कला पर उपनिषदों, पुराणों और महाकाव्यों की गहरी छाप है क्योंकि चिंतन ही कलात्मक अभिव्यक्ति का केन्द्र –बिंदु है जिसका प्रभाव सार्वभौमिक रूप से पूरी मानव–जाति के मन–मस्तिष्क को प्रभावित करते हुए कल्पना का स्त्रोत बन कर प्रकट होता है।[6] भाषाओं की सीमा से परे ज्यामितीय रूप और आकारों की एक अपनी ही शब्दावली होती है जिससे अनेको–अनेक दार्शनिकों व धर्मशास्त्रियों ने प्रेरणा पाई। यह अमूर्त प्रतीकवाद मानव जाति को अपनी कलात्मक अभिव्यक्तियों का बखान करने में सहायता करता है क्योंकि प्रकृति के हर भेष में हम हर प्रकार के ज्यामितीय आकार लिप्त हुए पाते है। प्रख्यात उत्तर –प्रभाववादी चित्रकार –**'पॉल सिज़ान'** ने भी इस संदर्भ में लिखा था

कि, *''प्रकृति की हर उत्पत्ति गोला, शंकु और सिलेंडर आकार से अपना रूप पाती हैं।''* गणित में शून्य को गोल ज्यामितीय आकार में दर्शाने का श्रेय भी योगिक क्रियाओं को जाता है। इसी प्रकार और भी बहुत से ज्यामितीय आकारों व रूपों द्वारा ब्रह्माण्ड के विस्तार व विशालता को प्रचण्ड रूप से ब्यान किया जाता है। यह निश्चित रूप से मन और कल्पना की अथाह गहराई तक पहुँचने के लिए महत्त्वपूर्ण मूल्य जोड़ता है।

वैदिक आरेखों और तांत्रिक मंत्रों में या जैन सूक्ष्म डिजाइनों में ज्यामितीय प्रतीक और विनियास पंजीकृत हैं और सौंदर्य के रूप में ज्वलंत है, जबकि मंत्र आत्मा को पुण्यतत्व से मिलाते हुए वस्तु को शुद्ध तत्व में खो देता है।[7] बौद्ध अवधना कथाओं के एक संस्कृत संकलन **'दिव्यवादना'** के अनुसार, *''एक छवि या एक यंत्र देवत्व के अन्य पहलुओं को बुलाने के लिए मनोवैज्ञानिक तंत्र का एक टुकड़ा है।''* तांत्रिक ग्रंथ आंतरिक दृश्य की आवश्यकता और उसमें छिपे अर्थों पर ज़ोर देते हैं। यथार्थ को एकाग्रता के सर्वोच्च रूप में कल्पना करने के लिए, कलाकार को सक्षम बनाने के लिए दृष्टि आवश्यक है– अंतरिक व बाहरी। दृष्टि का सूमेल ही उच्च कला का निर्माण करता है। एक दृश्य छवि लिखित शब्द की तुलना में देखने वाले पर कहीं अधिक प्रभाव छोड़ती है। सुप्रसिद्ध कला इतिहासकार–**'आनंद. के. कुमारस्वामी'** कहते है कि, *''सुक्राचार्य द्वारा मानसदर्शन का अभ्यास, पूजा और कला में समान है। वास्तव में यह एक 'ध्यानमंत्र' है।''*[8] इस प्रकार कला केवल पेशा नहीं है बल्कि निर्माता और दर्शक दोनों के लिए सत्य और आत्म–साक्षात्कार की दिशा में एक रास्ता है। तंत्र हमारे मन और आत्मा को इस अहसास की ओर प्रेरित करता है कि एक विशेष रूप, आकार या पैटर्न में एक निश्चित सौंदर्य मूल्य मौजूद है और यह अहसास हमें परमात्मा के अंतरतम तत्व की ओर ले जाता है।

तंत्रों में उल्लेख है कि ब्रह्माण्ड पचास मातृका ध्वनियों से विकसित होता है।[9] मातृकाओं को प्राचीन ग्रंथों में **'सृजन'** की छोटी माता के रूप में परिभाषित किया गया है, जो ध्वनि की प्रत्येक कंपन की गहरी जड़ों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिससे अक्षरों, शब्दों और भाषा को आकार मिलता है। इन रूपों के गर्भ से कई अन्य रूप, आकार व स्वरूपों की उत्पत्ति की संभावनाए पैदा होती है अगर विभिनन संयोजनों और क्रमपरिवर्तनों में एक साथ जोड़ा जाए। उदाहरण के लिए **'त्रिभुज'** के तीन पक्ष– दिव्य विचार और अस्तित्व के स्त्रोत का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये तीन चरण–**'इच्छा शक्ति'**,**'ज्ञान की शक्ति'** और **'क्रिया शक्ति'** या सरल शब्दों में यह **'आकांक्षा'**,**'सूत्रीकरण'** और **'अभिव्यक्ति'** के अनुरूप हैं।[10] एक **'बिंदु'** के आकार में इस प्रतीकात्मक त्रिकोण का केन्द्र देवत्व का एक पूरा प्रतीक बन जाता है।[11] इस बिंदु से ध्वनि, जीवन और चेतना की तरंगों का उदय होता है। यह आश्चर्यजनक नहीं है कि कई महान भारतीय चित्रकार जिन्होंने सच्चे अर्थों में इस अनुशासन को अपना आत्म समर्पित किया, आखिरकार वे संत बन गए क्योंकि कला ध्यान की तरह हैं। जागृत चेतना के फल को महसूस करने और उसका स्वाद लेने के लिए जिस तरह की एकाग्रता, ध्यान और चिंतन की आवश्यकता होती है उसमें कई समकालीन कलाकार असफल पाये जाते हैं जो अपने आप को तांत्रिक कला में प्रवीन मानते हैं। उनके लिए यह रंगीन रचनाएँ केवल सजावट की वस्तुओं तक सीमित है। कला की तथाकथित

समकालीन तांत्रिक शैली के अभ्यासियों को रूप और आकृतियों के सार और मूल गहरे प्रतीकवाद और रूपकों का ध्वनि ज्ञान होना चाहिए, जो एक विशेष ज्यामितीय रूप से पनपते और बदलते हैं।

प्रसिद्ध समकालीन भारतीय चित्रकार जिन्होंने इस प्राचीन तांत्रिक कला के रूप को अपनाया और जिन्होंने तंत्र कला के कुछ मूल सिद्धांतों के आधर पर अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति को और आत्मसात किया है उनमें प्रमुखता–**'जी.आर. संतोष'**, **'बीरेन डे'**, **'के.सी.एस. पाणिकर'**, **'जे. स्वामीनाथन'**, **'एस.एच. रज़ा'** और **'सोहन कादरी'** का नाम शामिल है। गुलाम रसूल संतोष जिनको हम जी.आर. संतोष के नाम से भी जानते हैं का जन्म 1929 में श्रीनगर, कश्मीर में हुआ। उन्होंने किसी भी कला विद्यालय या कला गुरू से शिक्षा नहीं पाई किन्तु उनका लगाव तांत्रिक दर्शनशास्त्र से जुड़ा रहा तथा उन्होंने अनेक तांत्रिक कला के चित्रों का अध्ययन करते हुए तंत्र के मूल तत्वों को जानने का अथाह प्रयास किया क्योंकि इस कला से ही हम सृष्टि के रचनाकार के प्रचण्ड रूप को छू सकते हैं। जी.आर. संतोष के लिए चित्रकला एक कविता है जिसकी कोई सीमा नहीं तथा तांत्रिक कला के रूप, आकार व स्वरूपों को कुशलतापूर्वक पूरे विश्व में फैंलाने का बड़ा श्रेय आपको ही जाता है। हर चित्र में चुंबकिय सुंदरता है तथा ज्यामितीय आकार कुदरती रूप से उपजते प्रतित होते हैं जिनमें दिव्य प्रकाश व सौंदर्यशास्त्र की झलक हर मन को छू लेती है और उन्हें चिंतन की ओर ले जाने का मार्ग दर्शन करती है। आपने यह भी बताया कि, *''कश्मीर में सदियों से 'हिन्दू–बौद्ध–तांत्रिक' रहस्यवादी धार्मिक परंपराओं का प्रचलन रहा है।''*[12] संतोष ने भी अपनी प्रारम्भिक कला यात्रा व्यख्यात घणवादी चित्रकार –**'पॉल सिज़ान'** से प्रेरित होकर शुरू की जिसमें उन्होंने सूफ़ी रहस्यवादी कविता और संगीत का मिश्रण किया। आगे चलकर अपनी कला को नया मोड़ देते हुए मन की साधना पर ज़ोर देते हुए दिव्य शक्ति को चखने का प्रयास किया और अनेका–अनेक चित्रों का निर्माण किया जिसमें हीरे की चमक तथा और भी रोचक ज्यामितीय आकार जोड़े जैसे कि **'पिरामिड़'**,**'वृत्त'**, **'एक ठोस गोला'**,**'वर्ग'** और **'घन'**। उन्हें वास्तव में 'मॉड़र्न इंड़ियन पेंटिंग' में **'नव–तांत्रिक'** तरंगो का अग्रदूत कहा जा सकता है। कैनवास और कागज़ पर पेटिंग के लिए उनके पसंदीदा विषय हैं–**'शक्ति'**, **'श्री यंत्र'**,**'तत्व अग्नि'** और **'तंत्र श्रृंखला'**।**(1)**

बीरेन डे अभी तक **'नव–तांत्रिक'** विचारधारा के एक और प्रमुख चित्रकार हैं जिसका उन्होंने अपने कला जीवन के दौरान धार्मिक रूप से पालन और अभ्यास किया। बीरेन डे का जन्म अविभाजित बंगाल के फरीदपुर (अब बांग्लादेश) में 1926 में हुआ। उनकी पीढ़ी के कई अन्य चित्रकारों की तरह उन्होंने अपने केरियर की शुरूआत **'पोर्ट्रेट पेटिंग'** से आरंभ करते हुए मानविय आकरों के चित्रों तक बाखूबी ढंग से चलते हुए 1950 में अपने दूसरे दौर में मुक्त–प्रवाह आकार और रूप के चित्रण का निर्माण करते हुए अंततः 70 के दशक में उन्होंने 'नव–तांत्रिक' शैली को अपनाया। तंत्र कला अधिकतर साधना से जुड़ी है जो आध्यात्मिक अभ्यास से सजृन के कार्य से संबंधित है। बीरेन डे ने एक सपाट सतह पर अपनी कला कौशल से ज्यामितीय आकारों का रस निकाला और इन रूपों को सर्वव्यापी शक्ति को पकड़ने के लिए रंग और प्रकाश

में लिपटा दिया, जो जीवन शक्ति की सबसे शुद्ध ऊर्जा है। ये ज्यामितीय रूप अधिकतर पारभासी और पारदर्शी होते हैं। जिन्हें देखकर दर्शक खुद को चिंतन के अमृत से सराबोर पाता है। उन्होंने 'यिन' और 'यांग' को 'पुरूष' और 'महिला बलो' के रूप में अपनाया जिसे अंग्रेज़ी भाषा के 'यू' अक्षर के रूप में शैलीबद्ध किया। [13]**(2)** कुछ अन्य आकृतियाँ जो उनकी गतिशील रचनाओं में तैरती हैं वह **'गोलाकार रूप'** और **'वक्र'** हैं। कई जीवन चित्रों में उन्होंने ज्यामितीय रूप से ब्रह्माण्ड के बीज को दर्शाने का सफल प्रयास किया क्योंकि हर रचना का केन्द्र –बिंदु यही तत्व है। प्रकाश और छाया के प्रभावी चित्रण में उनकी महारथ थी और उन्होंने प्रत्येक पेटिंग में बड़ी ऊर्जा का संचार किया, बुद्धिमानी से अपनी कलॅर –पैलेट का चयन किया जो विषय और उपयोग किए गए रूपों के साथ विविध था लेकिन उन्होंने हमेशा अमूर्त अभिव्यक्ति की गहराई को दर्शाया। इस अमूर्त अभिव्यक्ति के माध्यम से तांत्रिक विचारधाराओं पर आधारित, वे दिव्यता और ब्रह्माण्ड की विशालता के प्रकाश को प्रसारित करने में सफल रहे जहाँ सब कुछ अवशोषित होता है। बहुत से पुरस्कारों से सम्मानित बीरेन डे ने 'कलकत्ता कॉलेज ऑफ आर्ट' से डिप्लोमा प्राप्त किया तथा 'दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट' में 1952–53 तक कार्यरत रहे। तत्पश्चात् उन्हें 'फुलब्रॉइट ग्रांट' मिली तथा उन्होंने न्यूयॉर्क में कला साधना करते हुए कई प्रदर्शनियाँ लगाई। उन्होंने 1962 में 'वेनिस बाइॅनाले' में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

''मैं महान भारतीय आध्यात्मिक चिंतकों द्वारा अपने कलात्मक केरियर में प्रभावित रहा हूँ जिन्होंने आध्यात्मिक दुनिया की खोज की, जिसकी व्याख्या मैंने अपने कैनवास पर की है''– के.सी.एस. पाणिकर। पाणिकर का जन्म 1911 में कोयंबटूर में हुआ था। अपनी कलात्मक प्रतिभा की खोज करने से पहले उन्होंने डाक विभाग में और बाद में भारतीय जीवन बीमा सहयोग में काम किया। उनके डूडल और चित्र जो प्राचीन भारतीय ग्रंथों से उपजे थे जो उनके गुरू 'श्री देवी प्रसाद रायॅ चौधरी' जो 'मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट' के तत्कालीन प्रिसिंपल थे द्वारा खूब सराहे गए जिन्होंने उन्हें इस सुलेख शैली में गहराई से जाने और अर्थ की खोज करने की सलाह दी। पाणिकर ने अपना समय इन रूपों में अंतर्निहित सार का अध्ययन करने और तैयार करने के लिए समर्पित किया जो अपने कैनवास की सपाट सतहों पर सौंदर्यशास्त्र का उपयोग करते समय शांत और आकर्षक थे।[14] यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि पाणिकर ने अपनी कलात्मक प्यास को शांत करते हुए प्राचीन ग्रंथों तथा पाण्डुलिपियों में बने रहस्यमई व रोचक चिन्ह जैसे कि **'मोहनजोदड़ो बैल'**, **'सूर्य की छवि'**, **'तराजू'**, **'मछलियाँ'** तथा **'साँप'** के आकारों से प्रेरणा लेते हुए भारतीय संस्कृति की चेतना व परंपरा को भीतर व सूक्ष्म ढंग से जानने का प्रयास किया। **(3)** आप इस शैली के प्रमुख कलाकारों की कतार में बहुत आगे पाए जाते हैं। आपने अनेक प्रदर्शनियाँ भारत व अन्य देशों में लगाई हैं।

इस नक्शेकदम पर चलने वाले अन्य प्रसिद्ध चित्रकारों के बीच, अपने स्वंय के संस्करणों को स्टाईल करने के लिए सुलेख प्रतीकों, ग्रंथों, आख्यानों और ज्यामितीय रूपों का उपयोग करके कला को रोमांचक और आर्कशक बनाने वाले महान चित्रकार थे–**'जे.सुल्तान अली'**। जब हम तांत्रिक चिन्हों, रेखाओं, रंगों, आकारों की बात करते हैं तब जे. सुल्तान अली का नाम सामने आता

है जिन्होंने बहुत मेहनत तथा बारिकी से लोक चिन्ह तथा लोक कथाओं से प्रभावित होकर ऐसे अनूठे चित्र बनाए जो मन–लुभावने तो होते ही हैं किन्तु उनमें संवेदनशीलता व मन–मस्तिष्क का चिंतन भी बाखूबी झलकता है। गहरी पृष्ठ भूमि पर घने गरे टोन में आगे–पीछे जाती हुई छवियाँ सपाट सफ़ेद पृष्ठ भूमि पर बहुत रोचक तथा दिलकश लगती है जो उनकी उत्तम हस्तकला का प्रतीक है। **(4)** आपने भी अपने चित्रों में कई प्रकार के जीव –जंतु व मानव का अनूठा मिश्रण किया। अन्य महत्त्वपूर्ण कलाकार जो इस शैली में निपुण है उनमें चित्रकार –**'ज्योति भट्ट'**, पंजाबी कलाकार –**'सोहन कादरी'** तथा मूर्तिकार–**'नंदगोपाल'** व चित्रकला के निष्ठावान चित्रकार–**'एस.एच.रज़ा'** भी आते हैं जिन्होंने बिंदु, त्रिकोण, वर्ग और रेखाओं का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए भारतीय संस्कृति तथा दर्शन की रूह को पकड़ने का प्रयास किया। इन सब कलाकारों का नाम भारत के इलावा विश्व के अन्य देशों में भी जाना जाता है। तंत्र कला रहस्यवादी अभिव्यक्तियों का एक भंडार है जिसने कुछ जटिल विचारों को परिभाषित और स्थिर किया है जो कि ज्यामितीय प्रतीकों में मनुष्य और सृष्टि के अस्तित्व से संबंधित है, जो किसी की बुद्धि और रचनात्मकता को अभिभूत करने की क्षमता रखते हैं। पिछले छह या सात दशकों से, कलाकार इस अति–प्रवाहित जलाशय से अपनी प्यास बुझा रहे हैं, और उन्होंने 'नव–तंत्र कला' के शानदार कार्यों का निर्माण किया है जो अमूर्त संवेदनाओं से परिपूर्ण हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. मुखर्जी,अजीत**;** 1967,*तंत्र आर्ट : इट्स फिलासफी एण्ड फ़िजिक्स,* रवि कुमार, पेरिस, पृष्ठ –**11** ।
2. *वही*
3. मुखर्जी, अजीत **;**1977, *द तांत्रिक वे : आर्ट, सांइस एण्ड रिचुअल,* थेम्स एण्ड हड़सन लिमिटेड, लंदन, पृष्ठ –**10** ।
4. मुखर्जी, अजीत **;**1967, *तंत्र आर्ट : इट्स फिलासफी एण्ड फ़िजिक्स,* रवि कुमार, पेरिस, पृष्ठ –**11** ।
5. मुखर्जी, अजीत **;**1977, *द तांत्रिक वे : आर्ट, सांइस एण्ड रिचुअल,* थेम्स एण्ड हड़सन लिमिटेड, लंदन, पृष्ठ –**15** ।
6. *वही*
7. मुखर्जी, अजीत **;**1967, *तंत्र आर्ट : इट्स फिलासफी एण्ड फ़िजिक्स,* रवि कुमार, पेरिस, पृष्ठ –**13** ।
8. *वही,* पृष्ठ–**13**–149.*वही,* पृष्ठ–**1610**.*वही,* पृष्ठ–**17**
11. डैनीएलू , एलेन**;**1964, *हिन्दू पोलिथिस्म,* प्रिंसटन युर्निवसीटी प्रेस, यू.एस.ए., पृष्ठ **–38–39 ।**
12. बशीर, अलताफ**;**जनवरी 23, 2014, *द आर्ट ऑफ जी.आर. संतोष,* ग्रेटर कश्मीर।

13. नायर, उमा ;मार्च 13, 2011, *ओबिचुअरी : बीरेन डे (1926–2011), टाइम्स ऑफ इण्डिया।*
14. रे, प्रणब रंजन ;नवम्बर, 2010, *के.सी.एस. पाणिकर एण्ड हिज़ वर्ड्स एण्ड सिम्बलज़,* आर्टएक्स न्यूज एण्ड वियूज़, विक्रम बछावत फॉर चिज़ल क्राफ्ट प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता।

Plate -1

Plate -2

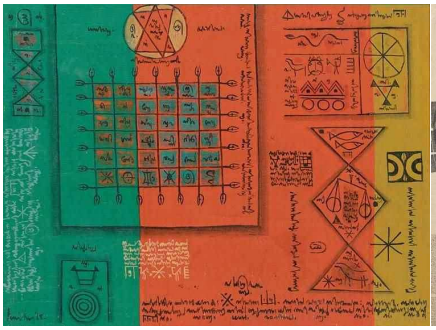

Plate -3

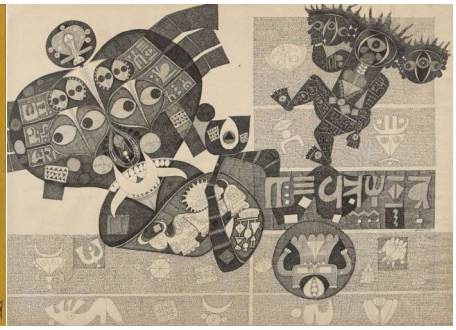

Plate -4